मानवता का पद बड़ा

पति पंछी के पर उगे, निखर गया परिवार।
ज्यों सुगनी के पर लगे, बिखर गया संसार।।

पुरुष पौरुष पलित दलित, क्यों न पुरुष आयोग।
उल्टी गंगा बह रही, तिल-तिल तलाक रोग।।

है आनंदित शिक्षित पति,अनपढ़ पत्नी संग।
पढ़ी-लिखी पत्नी करे, पति की गति बदरंग।।

पतिदेव ने पढ़ा लिखा, पत्नी को दी पांख।
'सावन' तिरिया चाल से, पति पर छिड़के साख।।

पत्नी को पोथी दिए, गजा गए पतिदेव।
मुंह के बल ऐसे गिरे, जैसे 'सावन' सेव।।

अपना खोता लेसि के, चिरई फुदके देश।
तोता-खोता ना मिले, 'सावन' बचे क्लेश।

मन से तू संपन्न बन, धन में है सुख नाहिं।
मानवता का पद बड़ा, पद में है कुछ नाहिं।।

-सुनील चौरसिया 'सावन'
9044974084

साहित्य रत्न जुलाई2023